अंजोरिया

भोजपुरी के इण्टरनेट पत्रिका

फागुन अंजोरिया 2060 विक्रमी / मार्च 2004 ईस्वी साल: 1 अंक: 8

एह अंक में :

सम्पादकीय का बहाने	डा. राजेन्द्र भारती	2
समझ बुझि के बटन दबइहऽ	त्रिभुवन प्र. सिंह प्रीतम	3
हिन्दुस्तानी हालचाल	बर्बरीक	4
गेल्हारानी फगुआ में	देवकुमार सिंह	5
कुण्डलियां	त्रिभुवन प्र. सिंह प्रीतम	8
गाले मले अबीर	बद्रीना.तिवारी शाण्डिल्य	9

सम्पादक के कलम

हमनी के देश महान

डा. राजेन्द्र भारती

इ अखबार वालन से त सरकार के नाक में दम आ गइल बा। अखबारवालन के चले त सरकार के एको मिनट ना चले दीहि लोग। अइसन सख्त बेचारी इन्दिरो गांधी एह लोग से हार मान गइल रही।

ऐ भाई अखबारवाला, तनकी शरम करऽ। तनी सरकार चले त दऽ। बाकिर ना, इ अखबारवाला लोग बस विरोधी दल लेखा चीखत चिल्लात बा लोग। चोरी, डकैती, छिनैती, हत्या, बलात्कार, घूसखोरी, कालाबाजारी, मंहगाई, भ्रष्टाचार, दलबदल, दगाबाजी, सीनाजोरी, हराम खोरी, आउर ना जाने का का जातिगत, व्यक्तिगत मामला अइसन कुछ छाप देत बा लोग। बूझाता कि जइसे सत्तापक्ष से जियादा विरोधी पक्ष से प्यार करत बा लोग।

सरकार देश के उन्नति खातिर का नइखे करत ? बाकिर एह लोग के लउकते नइखे। परतेक साल सैकड़न गांवन में बिजली पंहुचावल जात बा, हजारन गांव में नलकूप लगावल जात बा, नहर खोदावल जा ता, कुंआ, तालाब आ बांध के निरमान होत बा, नया नया स्कूल कालेज खोलावल जात बा, आदिवासी हरिजन छात्रन में फोकट में किताब बंटात बा, करोड़ो रुपिया के छात्रवृति बंटात बा, दलितन खातिर मकान बना के दिआता, अस्पताल खुलता, गांव गांव के सड़क से जोड़ल जाता, तबहूं ए अखबारवाला लोग ना जाने ओहू में कंहवा से भ्रष्टाचार खोज लेत बा लोग।

हमनी के देश कवन क्षेत्र में पीछे बा ? कला, साहित्य, खेल, संगीत, राजनीति, ईंधन, बिजली, खेती, उद्योग, व्यवसाय सबमें हमनी के आगे बढ़ि रहल बानी जा।

ई अखबारवाला लोग कलाकार के नकलची, साहित्यकार के दोसरा भाषा के साहित्य से झाड़ल, खेल में दलाली, संगीत मे चोरावल धुन, राजनीति में दलबदल आ छीछालेदर, ईंधन के रोज बढ़त दाम, बिजली के लोडशेडिंग का बादो बढ़ल बिल के पूरा भुगतान, खेती में दू नम्बर के खाद के बवाल, उद्योग में घोटाला, व्यवसाय में चोरबाजारी ओगैरहे छापे के रिवाज बना लिहले बा लोग।

आजादी के मात्र पचास बरीस में हमार दावा बा कि कवनो देश एतना उन्नति ना क पवले होई जतना हमनी का कइले बानी जा। अब ई बाति अखबारवाला लोग के नइखे लउकत त का कइल जा सकेला ? अरे ई अखबारवाला लोग के तनिको नइखे बूझात कि विश्वबैंक आ अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष में हमनी के अतना इज्जत बा कि करजा प करजा मिलत जात बा !

अखबारवाला लोग के एगो आउर सुभाव खराब बा कि तनकी सा पिआज शार्ट होई त हल्ला मचा के चालीस पचास रुपिआ किलो बेचवा के अढ़तिअन के कमवा दी लोग। पिआज त एगो नमूना बा, अइसहीं बहुत कुछ बा।

केकरा घर में झगड़ा ना होला ? पतोह दोसरे खानदान से आवेले। तनकी सा 'सास-पतोह' में रगड़ा होई तबले भोरही अ खबार चिल्लाई - सरकार अब गिर जाई। केतने लोगन के सांस परान टंगा जाई। जे जे एने ओने मुद्रा देले रहेला कि 'काम' बनि जाई ऊ बेचारा बिगड़ जाला। गरीब मरे खातिर सरकारी अस्पताल आ अमीर नर्सिगं होम पंहुच जाला। एहमें डाक्टर आ दवाईवालन के भला हो जाला।

अभिव्यक्ति के आजादी के मतलब ई ना होला कि केहू केहू पर भर मन पांक, गोबर, गलीज उछालो। एकबेर बिहार सरकार प्रेस बिल लागू करे के कोशिशो कइलस बाकिर हमरा देश के जनता उन्हिकर साथ ना

दिहल, ना तऽ अखबारोवाला लोग बूझि जाईत।

अरे देश हमनी के चलावे के बा। ई लोग झूठे पन्ना रंग के भड़कावत बा। ई केहू नइखे सोचत कि घासो के रोटी खा के, रात भर अलाव तापि के, दुरगतियो सहि के हमनी के नियति भ गईल बा कि अगुआ के कहते 'मेरा देश महान' भूखे पेट जागि जोस आ चिल्लाइब जा 'मेरा देश महान', 'मेरा देश महान'।

कविता

समुझि बुझि के बटन दबइहऽ

त्रिभुवन प्रसाद सिंह प्रीतम

फेर चुनाव के बेरा आइल,
नेतन के बिस माधि समाइल।
शुरु हो गइल तुम्मा फेरी,
बे चिन्हले मत नियरा जइहऽ।
समुझि बुझि के बटन दबइहऽ।

जे जे आई, जे जे लउकी, ऊ
असमाने पर से फउकी।
सबकर सुनीहऽ, मन में गुनीहऽ,
थाहि थाहि के अरथ लगइहऽ। समुझि 0।

सब तोहरा के तेल लगाई,
हितई नतई ले अझुराई।
चिहुंकल रहिहऽ, ए मोर भइया,
अंउजइला से मति अंउजइह। समुझि 0।

नोकरी चकरी मिली नीमनकी,
रुपिया पइसा सगरी ठनकी।
लालच में परलोक नसाई,
देखीहऽ देखीहऽ धरम बचइह। समुझि 0।

आड़े बेड़े जे बिछिलाई,
पांच बरिस ले ऊ पछिताई।
फरिका रहिके जाति पांति से,
लोकतन्त्र के रीति निभइह। समुझि 0।

सम्पादक, अंजोरिया,
कदम चौराहा, बलिया - 277 001

शारदा सदन, कृष्णानगर, बलिया

बेबाक

हिन्दुस्तानी हालचाल

बर्बरीक

जब हम ई लिख रहल बानी चौदहंवी लोकसभा के चुनाव के दिन तय हो गईल बा। 20 अप्रिल से लेके 10 मई मक चार चरण में चुनाव होखी। युद्ध के शंख त बाज गइल बाकिर अबहीं ले विरोधी दल के गठबन्हन आपन रुप नईखे लिहले। सोनिया जी के भरपूर कोशिश कइला का बादो अब ले एगो मजगर गठबन्हन नईखे बनल। लोग आवता, सोनियाजी का संगे चाय पिअता आ जाके भाजपा में शामिल हो जात बा। मायावती जी के माया के थाह सोनिया जी के अबले नईखे लागि सकल।

लालू भाई के लीला तऽ यादव कुल शिरोमणि भगवान कृष्ण जी लेखा अपरम्पार बा। कहि दीहले कि अगिला प्रधानमन्त्री रामविलास पासवान के बनावल जाई। अब उनुकरा एह बात के मतलब का बा ई उहें के बता सकिलें। कहीं बैलून लेखा फूलवाके रामविलास जी के फोड़ेके मति मन होखो।

भाजपा में शामिल होखे के रफ्तार ई बा कि लोग कहत बा कि जे केहू ओकरा ऑफिस का तरफ से निकलत बा ओकरे के नायडूजी पकड़ि के भाजपा में शामिल करवा देत बाड़े। सोनिया के गोतनी मेनका अपना बेटा वरुण संगे भाजपा में चलि गईली। संजय गांधी के आत्मा का सोचत होखी उहे जानो। इमरजेन्सी के कर्णधार संजय गांधी के मेहरारू आ बेटा, बुलडोजर फेम के जगमोहन, चारा घोटाला के आरोपी जगन्नाथ मिश्र वगैरह वगैरह सभे केहू 'बाजपेयी चरणम् गच्छामि' कह रहल बा।

तेरह दिन आ तेरह महिना का बाद अब तेरह साला सफर पर बाजपेयी के कदम बड़ा मजबूती से चल रहल बा। आ सबले खास बाति ई बा कि मतगणना तेरह मई के होखे वाला बा। बूझाति बा जे विरोधियन के तेरही होईए के रही।

बर्बरीक पिछला चालीस साल से चुनाव तमाशा देखि रहल बा। एह चुनाव लेखा पस्त हालत में विरोधी कबो ना रहलें। 84 में जब भाजपा के मोटहन दूई गो एमपी रहले तबो ऊ अतना पस्त ना लउकत रहे। हालात अइसन बा कि कांग्रेस के प्रवक्ता कपिल सिब्बल सब राजनीतिक दलन के शुभकामना देत बाड़ें, कांग्रेस का मंच पर से नवीन जिन्दल बाजपेयी के गुनगान करत बाड़ें, सोनिया जी के चाय पी के आरिफ खान भाजपा के सदस्य बनि जात बाड़ें, रात में सोनिया जी से बतिया के अगिला दिन मायावती घोषण कर देत बाड़ी कि कांग्रेस से कवनो समझौता नईखे हो सकत।

ईहो पहिलके हाली हो रहल बा कि चुनाव से पहिले के अन्दाज वोट में भाजपा के बढ़त देखावल जाति बा। ढेरे सम्पादकन के हालत नीलकण्ठ अइसन हो गइल बा। कवना मुंहसे कहो लोग कि जनता भाजपा के खिलाफ बिआ। मुसलमान भाईअन के भड़्वाकलो काम नइखे करत। कतना मुसलमान नेता भाजपा में शामिल हो रहल बा कि बूझात नइखे कि कइसे 'भारत उदय' के 'भारत पस्त' बनावल जाव। सब विरोधी दल आ सेकुलर पत्रकार लोग ई माने के तइयारे नइखे कि भारतो के उदय हो सकेला। काहे कि भारत उदय हो गईल त ऊ लोग का करिहें, कहां जईहें। बर्बरीक के पूरा सहापुभूति ओह लोग का संगे बा बाकिर एगो कहाउत ह –'गीध का सरपला से डांगर ना मरे'।

जगदीशपुर, बलिया – 277 001

गप्प

गेल्हारानी फगुआ में

देवकुमार सिंह

'काहे मुंह लटकवले बानीं ? कवना सोच फिकिर में पड़ि गईल बानीं ? एह फागुन के महीना में सब जीव जन्तु, गाछ बिरीछ लहलहाता, मुसुकाता, हंसता, ठठाता, आ रउआ अपना चेहरा पर बारह बजवले बानीं।' – गेल्हा रानी झाड़ू. बहारु करत तनि थथमि के अपना मरद नेवतानन्द से कहली। उ तकिया प कोहनी लगाके पेटकुनिये लेट के अपना गाल पर हाथ धइले रहलें। बगल में हाले में जनमल उनुकर नन्हका सूतल रहे। अपना मेहरारु के बाति सुनिके उ उठि के बइठ गइलें।

'तीन दिन बाद ए नन्हका के छठियार मनावे के बा। दू महीना के तनखाह इन्कम अैक्स में कटि गइल बा। पइसा कहां से आई, इहे हम सोचत बानी।' – नेवतानन्द बोललें।

'इ रउरा खातिर नया बाति बा का ? जइसे सतरहो लड़िकन के छठियार धूमधाम से रउआ मनवनीं ओसहीं हमरा अठरहमल के छठियार मने के चाहीं।'– गेल्हारानी जोर देके कहली।

'पांड़ाइन से काल्हु काहे खातिर झगड़ा करत रहु ?'–उनका काल्हुके झगड़ा इयाद पड़ि गईल।

'उ मुंहझउंसी कहत रहल हिया कि तू त राबड़ियो देवी से इकइस निकलि गईलू। त निठुरे मुंहे जबाब देनी हं – तें का जानतारे ? हमहूं बिहारे के नू हईं। एक एकगो बहिन हमनी के एक एक गो गांव बसा देले बानी जा। तोरा लेखा एकबांझिन ना हंई। टी.. टी.. एक लिट्टी। तें बांझो से गइल गुजरल बाड़े। तोर मुंहो दे खला में पाप लागी।'– गेल्हा रानी सुनावे लगली।

'उहो त झगड़ाहिन तोरे लेखा हिय, छोड़ले ना होई।'– बाति में मजा लेबे खाातिर नेवतानन्द उसुकवले।

'हं। कहलस हिय कि जो जो, कुकुर सियार लेखा छेरले नइखीं नू। हथनी के एके बेटा होला। हाथी चले बाजार, कुकुर भूंके हजार। बाकिर हमहूं छोड़नी हा ना। कहनी हा – तोर मरद त हिजड़ा ह। ओकरा में दम कहां बा अठारह गो लड़िका पैदा करे के। हमार मरद त लालू लेखा बहादुर ह, उनंको से बरियार डांड़ के ह। पईंचा दाल चाउर दिआला मरद ना। बुझले अभागिन, ना त एक रात खातिर तोरा के पईंचा दे देंती। एक बांझिन कहीं के ! बस अतने सुनवनी ह त लुत्ती लेखा भोग चलली हा।'– गेल्हा अतना कहि के आपन झाड़ू. जोर से पटकि के खाड़ हो गइली।

नेवतानन्द मने मने मुसुकात तिड़िकावे खातिर कहलें – 'आपन कुल्ही गहना दे द। बन्हकी धइके पईसा ले आईं। तबे छठियार में दीना ठकुरवा के नाच आई।'

'काहे के ? ए बाबा रे ! बड़ च खलोल बानीं। रउआ हमार बहनवे लउकेला। तीन सई बिगहा खेतवा का होई ? एक दू बिगहा ओही में से बन्हकी धइ दीं।'– गेल्हा रानी सुझाव देहली।

'हमनी के इज्जत माटी में मिल जाई। लोग बूझी कि एकनी के दिन पतरा गइल बा।'– नेवतानन्द उदास हो के कहलें।

'रूकीं, एगो बाति इयाद पड़ल। नाच बाजा में त पनरह बीस हजार रुपया लागि जाई। सबसे सस्ता पड़ी कवि सम्मेलन करा दीहीं। देशकुमार पाहुन परसो आइल रहलें हा। कहत रहले हा कि सबसे बढ़िया आ सबसे कम खर्चा कवि सम्मेलन में बा। चार पांच सई रुपिया में फरिया जाई। अतना रुपिया त हमरा गोलक में जमो हो गइल होई।'– खुश होके गेल्हारानी कहली।

'त दूनो गोलक धराव, हम तनी हिला

के देखीं।'- कहिके नेवतानन्द मुसुका दिहलें।

'जाईं, रउआ त हरदम इहे रहेला।'- कहिके गेल्हा रानी गइली आ आलमारी में से दूनो गोलक निकाल ले अइली। गोलक फोड़ा गईल। गिनाइल त सात सई छियासी रुपिया रहे। नेवतानन्द कवि लोग के पठा दिहलें।

....

विशाल भीड़ लागल रहे। पूरा पण्डाल ठकचि गइल रहे।मंच पर कवि लोग जम के बइठ गइल रहे लोग। गेल्हारानी के देखे खातिर लोग बेताब रहे। भोजपुरी के महान कवि श्री बद्रीनारायण तिवारी 'शाण्डिल्य' जी के सम्मेलन के अध्यक्ष चुनल गइल। अंजोरिया डाटकॉम के सम्पादक डा. राजेन्द्र भारती जी संचालन शुरु कइनी -

'माल्यार्पण बाद में होई, परम्परा तोड़त बानी, सबसे पहिले मंच पर, आपन पटाखा फोड़त बानी। -

कहऽ त डाल दीं, कहऽ ना डाल दीं,
पैन्ट से पिचकारी निकाल दीं।
कहऽ त डाल दीं, कहऽ ना डाल दीं।
'साहित्यिक रंग ई बड़ा कीमती हटे,
बेमंगले कइसे, आपन गुलाल दीं।
कहऽ त डाल दीं, कहऽ ना डाल दीं।'

कविता पढ़िके भारती जी अपना पाकेट से एगो गुब्बारा निकललन आ भीड़ में बइठल एगो युवती के ओर फेंकनी। बाकिर निशाना चुक गइल आ रंग भरल गुब्बारा बगल में बइठल ए गो बुढ़िया पर फूटि गइल। रंग से सराबोर बुढ़िया हँसते कहलस - 'इ नतिया रंगो भरले बाड़े स एहमें।'

'गेल्हारानी के बोलावऽ गेल्हारानी के।'- भीड़ में से आवाज उठल।

गेल्हारानी गोदी में नन्हका के लिहले मंच पर आ गइली।

'हमरा एही लड़िका के आजु छठियार ह। एहि बदे हम कवि सम्मेलन बोलवले बानी।'- गेल्हारानी बोललीं। मंच पर बइठल कवि लोग भउचका गइल।

'एगो फगुआ सुनावत बानी -
'भर फागुन बुढ़वो देवर लागे।
हो भर फागुन।
रस्सी लागे सांप
आ संपवा जेवर लागे।
हो भर फागुन।
रंगभर बाल्टी ले आइल दुअरवा।
भगवलो पर भागे ना
अतना थेथर लागे।
हो भर फागुन।
बनुख अस भरि भरि मारे पिचकरिआ।
छैल छबीला लेखा एकरो तेवर लागे।
हो भर फागुन।
केशवा रंगाइ के,
दाढ़ी मोंछ छिलवाइ के।
मुसुकी मारे मउगा सेवर लागे।
हो भर फागुन।
खेलिके पोछिटवा हम चुचुक चुभइनी।'

भीड़ मस्त होके अबीर गुलाल उड़वे लागल। एही बीच में बलिया के लोकप्रिय कवि डा.जनार्दन राय जी मंच पर चढ़ि गइनी आ गेल्हारानी का गाल पर अबीर मल दीहनी।

'हई देख एह बुढ़वा के पगलाइल।' भीड़ में से आवाज उठल।

'तोरा बहिन के सोटा मारो।' - कहिके गेल्हारानी मुच से उतरे चहली त डाक्टर साहब उनुकर बांहि पकड़ि के कहनी - 'तनी हमरो सुनी लीं -

'मन करे जेतना,
तू दे ल गारी आज भर,
मलपुअवो से मीठ बहुति गारी लागे,
हो फगुआ में।
रंगवा अबीरवा जेकरा ना लागल आजु,
उ रजवो बहुत बड़ भिखारी लागे,
हो फगुआ में।
संयम संकोचवा के

बाड़ि सब कटि गइल,
कविअन के कलमवा कटारी लागे,
हो फगुआ में।
भांग के सरबतवा से
भंगुआइल 'देव'के,
बुढ़ियो के नयनवा दूधारी लागे,
हो फगुआ में।'

अब 'शाण्डिल्य'जी के सबुर के बान्ह टूटि गइल। उहांका सोचनी कि हमरा के अध्यक्ष बना के ई बुरबक बना देले बाड़े स। हेतना दूर से आके कविता सुनावे के ना मिली त एक सौ छह डिग्री के बोखार लाग जाई। फेर कतहीं कवि सम्मेलन होई आ कविता सुनावे के मौका मिली तब नू बोखार उतरी। कवि कन्हैया पाण्डेय के धकिया के उहां के माइक पकड़ि लिहनी –

'रगड़ि के गाल में गुलाल,
दिहलस चमकाइ फगुआ में, हो फगुआ में।
किसमिस मुंहवा में,
दिहलस खिआइ फगुआ में। फगुआ में।
गोदिया में बुढ़वा लिहलस उठाइ फगुआ में।
गुलगुल गोलवा गइल पकड़ाई फगुआ में। फगुआ में।
जइसे बिजली के तारवा,
गइल छुआइ फगुआ में।
महातमा के मनवा गइल पितराइ फगुआ में। फगुआ में।
सुखल बांसवा गइल हरिआइ, फगुआ में।
'देव' के दिलवा गइल गदराइ फगुआ में। फगुआ में।'

कविता पढ़ि के शाण्डिल्य जी गेल्हारानी के गुलाल लगावे खातिर धउरनी।

'हई देखीं हई, बुढ़वा के फुर्ती ' – भीड़ में स आवाज आइल।

'बाबा, बबुआ के धरीं। थोड़े देर में आवतानी।' – कहि के गेल्हारानी उनुका गोदी में नन्हका के पकड़वली आ मंच से कूद के भागि चलली।कवि लोग आ सुनवैया लोग हकबका गइलें।

'बाकी कार्यक्रम जल्दी शुरु करीं सभे।' – एके साथ कई गो कवि लोग के आवाज आइल।

'देखीं सभे, हमार अभिनन्दन करे के इहवां बोलावल गइल रहल हा, आ हमरा कवितो पढ़े के ना मिलल।' – कवि कन्हैया पाण्डेय पाकेट से निमन्त्रण पत्र निकाल के दे खलवनी –

'श्रद्धेय कवि शिरोमणि,

अखिल ब्रह्माण्ड भोजपुरी कवि सम्मेलन में रउआ के सादर आमन्त्रित करत हमार दिल गदगद बा। सगे सम्बन्धी के संगे रउआ आईं।गाबर साम्राज्ञी गेल्हारानी के इहे निहोरा बा।

राउर अभिनन्दन।'

अब सभे कवि चंउकल। काहे कि सभका इहे कार्ड मिलल रहे। 'इहवां सबके अभिनन्दन होखे के चाहीं। चारो ओरि से कविअन के आवाज उठल।

हल्लागुली सुनि के नेवतानन्द मंच पर अइलें – 'सरकार, कवनो भूलचूक भइल होखे त माफ करी सभे। अभिनन्दन शब्द पर अतना हल्ला मति मचाईं सभे। संस्कृत में अभि के माने चारो ओर आ नन्दन के माने आनन्द देबे वाला होला। देशकुमार पाहुन संगे डा.भारती जी का घरे पांच साल पहिले हम गइल रही।। उनुका मकान पर बोर्ड टंगल रहे – 'अभिनन्दन कुटीर'। हमराइ शब्द पसन्द आ गइल। हम ओही घरी आपन उपनाम 'अभिनन्दन' रखि लेनी। अभी तकले हम रावा सभे के अभिनन्दने नू करत रहनी हा।

'घबड़ाई सभे मति। विशेष अभिनन्दन करे खातिर गेल्हारानी आपन पूरा रचना संसार संगे मंच पर फेरु आवत बाड़ी।'– गेल्हारानी के जवारी भाई श्री चन्द्रभूषण पाण्डेय प्रधानाचार्य मंच पर अइलें।

गेल्हारानी अपना सतरहो बेटा के ले के मंच पर फेरु हाजिर भइली। उनुका दूनो हाथ

में दूगो परात पुआ से भरल रहे।

'भरि भरि पेट पुआ खाईं सभे, आ अपना घरे दुआरे जाईं सभे।' – कहिके गेल्हारानी दूनो परात कवि लोगन के आगे बढ़ा देली। सतरहो बेटारंग भरल गुब्बारा कवि लोगन का कपार पर फोड़े लगले स। श्री उमाशंकर सिंह मास्टर साहब सादगी, सज्जनता आ संयम के कपड़ा उतारि के मंच पर कूदि गइलें आ गेल्हारानी के धरे के चहलें। भागत समय गेल्हारानी बिछिला गइली। इन्द्रदेव राय शिक्षक माइक झपटि के गावे लगलन –

'रंगवा के बिछिली में, गइली बिछिलाई फगुआ में।

गेल्हारानी गइली खूब गेल्हाई फगुआ में।'

ओने गेल्हारानी के नन्हका शाण्डिल्यजी के गोदी में सू सू कई दिहले रहे आ उ आपन ध ोती झारत रहन। उनुकर हाल देखि के मंच पर जोरदार ठहाका गूंजि उठल।

रामनगर, बलिया

कविता

कुण्डलियाँ

त्रिभुवन प्रसाद सिंह प्रीतम

होली आइल डफ बजल, बजल झाल मिरदंग।
बालक, बूढ़, जवान के, शुरु भइल हुड़दंग।
शुरु भइल हुड़दंग, शरारत लीपा पोती।
अंग अंग बदरंग, भइल सतरंगी धोती।
उड़ल गुलाल अबीर, मस्त झूमें हमजोली।
सर र र भाय कबीर, आ गइल चउचक होली।

आइल फागुन दिन चढ़ल, लोग भइल मदहोश।
भाव बढ़ि गइल, बिल बढ़ल, उतरल जोशखरोश।
उतरल जोश खरोश, दाम पर अटकल गाड़ी।
लाम भइल लमलोस, ताड़ पर लटकल ताड़ी।
बिसरल ढोलक झाल, भाव पर मन मुरझाइल।
मंहगी दिहलस ताल, ताल दे फागुन आइल।

होली के हुड़दंग ह, सर र र भाय कबीर।
ओकर मजिगर रंग बा, जेकरा हाथ अबीर।
जेकरा हाथ अबीर, उहे बा मस्त कलन्दर।
फूटि गइल तकदीर, बनि गइल जे लूबन्दर।
ई जनता के प्यार, अउर मउसमी ठिठोली।
बुरा न मनिह यार, आजु होली ह होली।

चूना चच्चा के लगल, रज्जा जी के रंग।
कल्लन के करिखा लगल, बदन बदन बदरंग।
बदन बदन बदरंग, सभे भइलें लूबन्दर।
होली के हुड़दंग, भंग में मस्त कलन्दर।
महंगा भइल अबीर, भाव चुनरी के दूना।
सर र र भाय कबीर, लगल फागुन में चूना।

बोतल खाली हो गइल, होते खतम शराब।
महक महक भरि रह गइल, उतरल रंग रुआब।
उतरल रंग रुआब, सउख से अंड़िचल छूटल।
पुरहर भइल हिसाब, करम के हांड़ी फूटल।
बिरथा भइल ईयार, जतन से लीपल पोतल।
अब का चली बाजार, भइल जब खाली बोतल।
तरकारी निमिया चढ़ल, लगल छुये असमान।
देखि देखि के मन भरल, फफनल फइलल थान,
फफनल फइलल थान, समय से फरल फुलाइल।
पानी पवलस पान, सनिचरा अस अगराइल।
तीत लउकिया देखि, मेहरिया दिहलसि गारी।
ठूस ठूस भरि पेट, करिखहू खा तरकारी।

शारदा सदन, कृष्णानगर, बलिया

होली गीत

गाले मले अबीर

बद्री नारायण तिवारी शाण्डिल्य

मानसरोवर खाड़ करारे,
मोती चुनि अनुहार निहारे।
देखे हंसा पलक पसारे,
मुसुकी ओठे, रहि रहि मारे
नयन कोर से तीर।
हंस संग, गाले मले अबीर।

धरती पहिरि बसंती सारी,
मोहे मन बैगनी किनारी।
झूमे पवन देई अंकवारी,
ले चुम्बन पछुआ झकझोरे,
देहिया मगन अधीर।
हंस संग, गाले मले अबीर।

मोजरी महके, कोईली कुहुके,
बंसवारी में पंडुक फड़के।
मारे पिचुकारी उठि तड़के,
कादा गोबर माटी फेंके,
अनजाने रहगीर।
हंस संग, गाले मले अबीर।

नेतवन बीच मचल बा होरी,
ठोके ताल बुलावे 'गोरी'।
जनमन से करिके बलिजोरी,
बादन के दे नून जखम पर,
घाव करे गम्भीर।
हंस संग, गाले मले अबीर।

नीचे उपर धूसर जांगर,
कई रंग में करिया बानर।
गंग हेरइली सांवर सागर,
सबद वाक्य के जहमत से कट,
कविगन बने अहीर।
हंस संग, गाले मले अबीर।

213, राजपूत नेवरी, बलिया